"जुग और रथ"

• नानक मेर सरीर का इक रथ इक रथवाहु । जुग जुग फेरि वटाइअहि गिआनी बुझहि ताहि । सतजुगि रथ संतोख का धरम अगै रथवाहु ।

अर्थः- हे नानक ! चौरासी लाख जूनियों में से शिरोमणी मानव शरीर का एक रथ है और एक रथवाह है भाव, ये जिंदगी का एक लंबा सफर है, मनुष्य मुसाफिर है इस लबे सफर को आसान करने के लिए जीव समय के प्रभाव में अपनी मति के अनुसार किसी ना किसी की अगुवाई में चल रहे हैं, किसी ना किसी का आसरा देख रहे हैं । पर, ज्यों - ज्यों समय

गुजरता जा रहा है, जीवों के स्वभाव बदल रहे हैं, इस वास्ते जीवों की अपनी जिंदगी का निशाना, जिंदगी के उद्देश्य भी बदल रहे हैं इसलिए हरेक युग में ये रथ और रथवाह बार - बार बदलते रहते हैं इस भेद को समझदार मनुष्य समझते हैं । सतियुग में मनुष्य के शरीर का रथ 'संतोख' होता है और सार्थी 'धर्म' है भाव, जब मनुष्यों का आम तौर पर जिंदगी का निशाना 'धर्म' हो, धर्म जीवन उद्देश्य होने के कारण सहज ही 'संतोख' उनकी सवारी होता है, 'संतोख' वाला स्वभाव जीवों के अंदर प्रबल होता है । ये जीव मानो सतिजुगी हैं सतियुग में बस रहे हैं ।

त्रेते रथ जते का जोर अगे रथवाहु । दुआपर रथ तपै का सत अगे रथवाहु । कलिजुग रथ अगनि का कूड़ अगे रथवाहु ।1।

अर्थः- त्रेते युग में मनुष्य शरीर का रथ 'जत' है और इस 'जत' रूपी रथ के आगे सारथी 'जोर' है भाव, जब मनुष्य की जिंदगी का निशाना 'शूरवीरता' (Chivalary) हो, तब सहज ही 'जत' उनकी सवारी होता है । 'शूरवीरता' के प्यारे मनुष्यों के अंदर 'जती' रहने का जोश सबसे प्रबल होता है । द्वापर युग में मानव शरीर का रथ 'तप' है और इस 'तप' रूपी रथ के आगे रथवाही 'सत' होता है भाव, जब मनुष्यों की जिंदगी का निशाना ऊँचा आचरण हो, तब सहज ही 'तप' उनकी सवारी होता है । 'उच्च आचरण' के आशिक अपनी शारीरिक इन्द्रियों को विकारों से बचाने के लिए कई तरह के तप, कष्ट झेलते हैं । कलियुग में मनुष्य के शरीर का रथ तृष्णा आग है और इस 'आग' रूपी रथ के आगे रथवाह 'झूठ' है भाव, जब जिंदगी का उद्देश्य 'झूठ' ठगी आदि हो तब सहज ही 'तृष्णा रूपी आग उनकी सवारी होती है । झूठ - ठगी में लिप्त लोगों के अंदर तृष्णा की आग भड़कती रहती है ।

• साम कहै सेतंबर सुआमी सच महि आछै साचि रहे । सभ को सचि समावै । रिग कहै रहिआ भरपूरि । राम नाम देवा महि सूर ।

अर्थः- सामवेद कहता है कि भाव, सतियुग में जगत के मालिक स्वामी का नाम 'सेतंबर' प्रसिद्ध है भाव, जब ईश्वर को 'सेतंबर' मान के पूजा हो रही थी जो सदा 'सच' में टिका रहता है; तब हरेक जीव सच में लीन होता है 'सतजुगि रथ संतोख का धरम अगै रथवाहु' जब आम तौर पर हरेक जीव 'सच' में, 'धर्म' में दृढ़ था तब सतियुग ही था ।

नाई लइऐ पराछत जाहि । नानक तउ मोखंतर पाहि । जुज महि जोरि छली चंद्रावलि कान्ह किसन जादम भइआ । पारजात गोपी लै आइआ बिंद्राबन महि रंग कीआ ।

अर्थः- ऋगवेद रिगवेद कहता है कि भाव, त्रेते युग में श्री राम जी का नाम ही सारे देवताओं में सूर्य के समान चमकता है वही हर जगह व्यापक है । हे नानक ! ऋगवेद कहता है कि श्री राम जी का नाम लेने से ही पाप दूर हो जाते हैं और जीव तब मुक्ति प्राप्त कर लेते हैं ।

कलि महि बेद अथरबण हुआ नाउ खुदाई अलहु भइआ । नील बसत्र ले कपड़े पहिरे तुरक पठाणी अमल कीआ । चारे वेद होए सचिआर ।

अर्थः- यजुर्वेद में भाव, द्वापर में जगत के मालिक का नाम साँवल 'जादमु' कृष्ण प्रसिद्ध हो गया, जो जबरन चंद्रावलि को छल के ले आया, जो अपनी गोपी सत्यभामा के लिए पारजात वृक्ष इन्द्र के बाग में से ले आया और जिसने वृंदावन में लीला की । कलियुग में अथर्वेद प्रधान हो गया है, जगत के मालिक का नाम 'खुदाय' और 'अलहु' कहा जाने लगा है, तुर्की

और पठानों का राज हो गया है जिन्होंने नीले रंग के वस्त्र ले के उनके कपड़े पहने हुए हैं ।

पड़हि गुणहि तिन्ह चार वीचार । भाउ भगति करि नीच सदाए । तउ नानक मोखंतर पाए ।2। पउड़ी।

अर्थः- चारों वेद सच्चे हो गए हैं भाव, चारों युगों में जगत के मालिक का नाम अलग - अलग पुकारा जाता रहा है, हरेक समय यही ख्याल बना रहा है कि जो - जो मनुष्य 'सेतंबर', 'राम', 'कृष्ण' और 'अल्लाह' कह - कह के जपेगा, वही मुक्ति पाएगा और जो - जो मनुष्य इन वेदों को पढ़ते विचारते हैं, भाव, अपने - अपने समय में जो - जो मनुष्य इस उपरोक्त विश्वास से अपनी धर्म - पुस्तक पढ़ते व विचारते रहे हैं वह हुए भी अच्छी युक्तियों चार सुंदर विचार, दलील, युक्ति वाले हैं । पर हे नानक ! जब मनुष्य प्रेम भक्ति करके अपने आप को नीच कहलवाता है विनम्र रहता है भाव, आडंबर अहंकार से बचा रहता है तभी वह मुक्ति प्राप्त करता है ।

• सतिगुर विटहु वारिआ जित मिलिऐ खसम समालिआ । जिनि करि उपदेस गिआन अंजन दीआ इन्ही नेत्री जगत निहालिआ । खसम छोडि दूजै लगे डुबे से वणजारिआ । सतिगुरु है बोहिथा विरलै किनै वीचारिआ। करि किरपा पारि उतारिआ ।13। (1-470)

अर्थः- मैं अपने सतिगुरु से सदके हूँ, जिसको मिलने के कारण मैं मालिक को याद करता हूँ, और जिसने अपनी शिक्षा दे के मानो ज्ञान का अंजन दे दिया है जिसकी इनायत से मैंने इन आँखों से जगत की अस्लियत को देख लिया है कि जो मनुष्य मालिक को बिसार के किसी और में चित्त जोड़ रहे हैं, वह इस संसार सागर में डूब गए हैं । मेरे सतिगुरु ने मेहर करके मुझे इस संसार समुंदर से पार कर दिया है ।

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि – "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"